९७. अखण्डता, सार्वभौमता ही मानव की प्रतिष्ठा है

१६-०९-२०१३

मानव परम्परा का वैभव मानवीयता ही है | कुत्ता, बिल्ली से लेकर गाय तक आचरण ही प्रधान रूप में जीवों का पहचान है | मानव शरीर भी जीव जात में गण्य है | जीवन गठनपूर्ण परमाणु है | इस ढंग से मानव का सम्मान अथवा वैभव, मानवीयता होना स्पष्ट होता है | इस क्रम में अर्थात मानवीयता के क्रम में अखण्डता, सार्वभौमता एक कड़ी है अथवा घटना है | ऐसी घटना के अनंतर अखण्डता का आचरण, वस्तुओं का विनिमय सहित उत्सव के रूप में होना देखा गया है | उत्सवों का स्वरूप- पहला जन्मोत्सव, विद्या प्रारम्भ उत्सव, स्नातकोत्सव, विवाह उत्सव के रूप में हर एक व्यक्ति के साथ घटना है | जन्मोत्सव को सार्थकता के अर्थ में शिशु काल से कामना किया जाता है | नृत्य, वाद्य, संगीत, कला प्रदर्शन होना माना जाता है | उत्सव का स्वरूप यही है | हर व्यक्ति का ऐसा उत्सव- एक परिवार में कम से कम १० लोग होते हैं, ज्यादा से ज्यादा १५ लोग होते हैं | इस विधि से महीने में दो जन्मोत्सव होना कल्पना किया जा सकता है | मानव उत्सव का प्रेमी है | आज भी हर कठोरता, दुष्टता, डाका, डकैती, व्यभिचार सभी वस्तु अथवा घटना उत्सव के रूप में मनाया जाता है |

इस क्रम में आंकलित किया जाय तो पता चलता है कि हर महीना दो-दो उत्सव घर में ही हो जाता है | ऐसा दस घर के बीच में जीते हैं तब २०० त्यौहार होता है | इस विधि से या इस आंकलन विधि से कितना त्यौहार करेंगे, सोचना पड़ेगा | इसी विधि से जब १०० घर के साथ जीते हैं, सभी त्योहारों को देख ही नहीं पाएंगे | ज्यादा से ज्यादा १० घर के त्योहारों को देख पाते हैं | इस क्रम में घर के त्यौहार ही जरूरत से अधिक होना पाया जाता है | इस क्रम में चलता हुआ मानव प्राकृतिक त्योहारों को मनाता है | प्राकृतिक त्यौहार छः होता है, ऋतु काल के रूप में | व्यवस्था का त्यौहार होता है, वह भी छः होता है | इस ढंग से १२ त्यौहार हो गया | यह हर वर्ष दोहराता है | सभी त्यौहार हर वर्ष दोहराने वाले हैं | तीसरा क्रम विनिमय के रूप में रहता है | विनिमय त्यौहार देश काल के अनुसार उत्पादन पर आधारित रहता है | ऐसा ही ये कार्यक्रम ऋतु कालीन त्योहारों के साथ बना रहता है | इस प्रकार से प्रधान रूप में ४ प्रकार से त्यौहार मनाया जाता है | परिवार सम्बंधी, ऋतुकाल सम्बंधी, उत्पादन सम्बंधी, व्यवस्था सम्बंधी और आयु सम्बंधी त्यौहार प्रसिद्ध हैं | इन सभी त्योहारों को मूल उद्देश्य के अर्थ में ही मनाया जाता है | मूल उद्देश्य समझदार होने, प्रमाणित होने के अर्थ में ही है | इन सभी प्रकार के त्योहारों में इन तीनों प्रमाण का वैभव है | अखण्ड समाज का सूत्र यही है | इसमें जोब विविधता होती है, वह गाना बजाना में ही है | नृत्य, गीत, वाद्य के रूप में आशय एक होते हुए विविधताएं उक्त तीनों विधाओं में होना पाया जाता है |

इस क्रम में चलने से अभयता का अनुभव होता है | इस प्रकार मानव का सहज आचरण रुपी मानवत्व का आचरण त्योहारों के रूप में प्रचलित होना ही अखण्ड समाज का स्वरूप है | अखण्ड समाज ही सार्वभौम व्यवस्था का आवश्यकता है | अखण्ड समाज के बिना सार्वभौम व्यवस्था होता नहीं | हर धरती पर सीमित आदमी ही होता है | अथवा, सीमित संख्या में आदमी होता है | ऐसा आदमी जात समझदारी के साथ जीना एक आवश्यकता बनता है | विकसित परम्परा का यही मुख्य मुद्दा है | विकसित चेतना शिक्षा विधि से सर्वसुलभ होता है | हर धरती पर शिक्षा विधि ही सर्वमानव में एकात्मता का, सर्वमानव में एक उद्देश्य का, सर्वमानव में एक अर्थ का स्पष्टीकरण होता है | इस विधि से चलता हुआ मानव परम्परा ही अखण्डता का आधार है | अखण्डता के बिना मानव परम्परा अथवा मानव समाज भय-मुक्त होना सम्भव नहीं है | भय-मुक्त होना ही सुलभ

रूप में घर बनाना, सुलभ रूप में जी पाना होता है | अभी जितना बड़ा घर, बड़ा व्यवस्था करने के बावजूद भयभीत रहते ही हैं | अभी तक मानव भय-मुक्त नहीं हुआ | पुलिस, मिलिट्री सब; बन्दूक, हैण्ड बम सब प्रयोग करते हुये भय-मुक्त होने का व्यवस्था नहीं बना | भय-मुक्त होने का विधि केवल मानवीयतापूर्ण आचरण ही है | मानवीयतापूर्ण आचरण तीन प्रमाणों के ऊपर निर्भर है | पहला प्रमाण समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व प्रमाणित करना, यह समझदारी के बिना होता नहीं | यही अनुभवमूलक प्रमाण है | अनुभवमूलक प्रमाण सम्मत विचार, व्यवहार होना पाया जाता है | तभी मानव सार्वभौम व्यवस्था को पाता है | अखण्ड समाज के बिना सार्वभौम व्यवस्था होता नहीं | अखण्ड समाज इन तीन प्रमाणों के बिना होता नहीं | इस क्रम में मानव अखण्ड समाज में जीना एक आवश्यकता होती है | इस आवश्यकता का स्वीकृति शिक्षा विधि से ही होता है | अथवा शिक्षा विधि से सर्व सुलभ होता है, ऐसा देखा गया है | इस विधि से हर मानव शिक्षित होना, शिक्षा विधि से तीनों प्रमाणों का अनुभव होना पाना, प्रयोजन सिद्ध होना, आचरण के लिये प्रवृत्ति बनना | इस क्रम में मानव पवित्रता के साथ जीन;चोरी, चमारी, सेंधमारी, जानमारी कार्यक्रम रूपी अपराधों से मुक्त होना बनता है | उसी के साथ सम्मोहनात्मक विधि से पाये जाने वाले तीनों उन्माद – लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद से मुक्त होकर, लाभ को सेवा के रूप में विनिमय विधि से सम्पन्न किया जाता है | न्याय और व्यवस्था के रूप में भोगोन्माद को सामान्य बनाया जाता है | उपयोगिता, उपकार के रूप में; व्यवहार रूपी प्रयोजन को सार्थकता के रूप में प्रमाणित किया जा सकता है |

इस ढंग से तीनों प्रमाणों का सार्थकता समझ में आता है | इस क्रम में मानव अपने विधि से जीना सुलभ होता है | अभी कठिनतम विधि से जीना स्वीकार हो चुका है | इस विधि से अखण्डता, सार्वभौमता होता ही नहीं | हर धरती पर अनेक देश, अनेक संविधान, अनेक समुदाय होना देखा जा रहा है | समुदायों को कार्यों के आधार पर पहचाना गया है | देशों को खनिज के आधार पर पहचाना गया है | इस विधि से मानव खनिज और व्यापार के आधार पर जीना शुरू किया | ये दोनों प्रक्रिया- खनिज और व्यापार बदलता रहेगा | खनिज भी बदलता रहेगा | खनिज निरंतर नहीं होता है एक जगह पर | निरंतर होने तक मानव का प्रयास बना ही रहता है | मानव अपने प्रयासों में व्यस्त रहता ही है | क्रमागत विधि से परिणाम को प्राप्त करता है | क्रमागत का तात्पर्य परम्परा सहज प्रयोजनों से अथवा घटना से है | घटना क्रम में अनिश्चयता बना रहता है | निरंतरता में निश्चयता बना रहता है | निश्चयता का स्वरूप लक्ष्य ही होता है | लक्ष्य का स्वरूप प्रमाण ही है | प्रमाण का स्वरूप समझदारी ही होता है | अभी तक समझदारी विकल्प विधि में ही है | शिक्षा विधि में पहचानना शेष है | शिक्षा चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से ही होगा | इसके लिए पाठ्यक्रम हम लिखकर दे चुके हैं | अभी कुछ लोग इसे अपने मन अनुसार चाहते हैं | अपने मन अनुसार का मतलब जीव चेतना ही है | अनुकूलता के लिए जो सोचते हैं, वो कुछ भी मानवीयता से जुड़ेगा नहीं | अनुकूलता, मनमानी का ही लक्षण है | आधुनिक शिक्षा पाया हुआ व्यक्ति तर्क को संतुष्ट करने के लिए सर्वाधिक सोचता है | यही इसमें फसने का कारण है | जबकि, ज्ञान विवेक विधि से तर्क संगत होता ही है | शिक्षा विधि में जाने के लिए चेतना विकास मूल्य शिक्षा को पहचानना ही होगा | इसमें भौतिक विज्ञान, गणित, सूचना, व्यवहार, बौद्धिक, अध्यात्मिक विज्ञान, विवेक, ज्ञान सभी समाया ही रहता है | चारों अवस्था के अध्ययन के लिए कहा है, शिक्षा में |

शिक्षा विधि में पहुंचने के बाद ही मानव में स्वीकृति का लक्ष्य कितना अच्छा परिणत होगा, आंकलित हो पाता है | मनुष्य ही इसका आधार है | मानव ज्ञानावस्था में होता है | यह नियति विधि से हुआ, मानव विधि से नहीं है | ज्ञान प्रवृत्ति नियति विधि है | हर मानव, हर देश काल में ज्ञानार्जन करना ही चाहता है, समाधान पाना ही चाहता है | धीरे-धीरे परिवार में समाधान को खोजा, अभी तक हुआ नहीं, परिवार ही बदलता रहा | झाड़ के नीचे का परिवार महल में पहुंचा, महल अपना परिणति के आधार पर

अच्छा, बुरा माना जाता है | अभी जिस घर में रहता है, थोड़े दिन बाद उसको बदलना चाहता है | इस क्रम को देखने से पता चलता है, मानव में परिणति की आवश्यकता है | कब तक आवश्यकता है? सार्वभौमता तक आवश्यकता है | सार्वभौमता मानव का प्रमाण रूप ही है | इस क्रम में मानव अपने वैभव को स्थिर रूप दे सकता है | धरती बच सकती है | धरती पुनः समर्थ हो सकती है | अभी जितना भी उपक्रम किये हैं, ज्ञान सम्मत कार्य न होने का फलन है | ज्ञान विधि विकल्प में प्रस्तुत किया है | तीनों प्रमाण अविभाज्य हैं | एक मनुष्य अनुभव, अनुभव सम्मत विचार, विचार सम्मत व्यवहार-कार्य करने वाला है | इस विधि से क्रमिक रूप में मानव जागृत होने की सम्भावना नियति विधि से ही है | प्राकृतिक रूप में विकास क्रम-विकास, जागृति क्रम-जागृति होना सुनिश्चित है | इसलिये मानव प्रयत्न करता है | इसी क्रम में विकल्प प्रस्तुत है | विकल्प भौतिकवाद, आदर्शवाद का विकल्प है | इन दोनों के स्थान पर विकल्प विधि से मानव समझदार होने का प्रस्ताव है | इस प्रस्ताव के अनुसार जीने से समाधान, समृद्धि आचरण में आता है | यह अस्तित्व में समझ के फलन के रूप में आता है | अस्तित्व नियति विधि से स्पष्ट है | नियति विधि का मतलब होने के रूप में स्पष्ट है | सामान्य रूप में मानव सोचता ही है | विशेष रूप में सोचकर अनुसंधान करता है | परम्परा रूप में समझ कर जीता है | परम्परा के बिना जीना बनता नहीं | परम्परा की सम्भावना के बिना जीना बनता नहीं | इन सभी बातों पर ध्यान देकर विकल्प प्रस्तुत किया है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)